1) संकल्प की स्वतंत्रता - नैतिकता की परिस्थिति

व्यक्ति के वे ही कर्म (आचरण) आते हैं जिन्हें करने में व्यक्ति को संकल्प की स्वतंत्रता प्राप्त हो। संकल्प की स्वतंत्रता का अर्थ है - व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार किसी काम करने अथवा न करने का विकल्प उपस्थित हो। उसे जब इस प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त होती है तभी वह अपने कर्मों के लिए उत्तरदायित्व होता है। और तब ही उसके कर्म को उचित-अनुचित अथवा अच्छा या बुरा कहा जाएगा अथवा नहीं। इस प्रकार समाज में नैतिकता की स्थापना

~~2) कर्ता द्वारा आत्मसंतोष या आत्मग्लानि~~

अनुभव के लिए व्यक्ति में संकल्प की स्वतंत्रता का होना अनिवार्य है।

कर्ता द्वारा आत्मसंतोष या आत्मग्लानि का अनुभव किया जाना - जब कोई व्यक्ति काम करता है संकल्प की स्वतंत्रता के साथ सोच समझ कर कोई कर्म करता है तो उसका कर्म दो प्रकार का होता है -

A) नैतिक नियमों अथवा सिद्धांतों के अनुकूल तथा

B) नैतिक नियमों अथवा सिद्धांतों के प्रतिकूल

जब व्यक्ति का कर्म नैतिक सिद्धांतों अनुकूल होता है तब व्यक्तिगत रूप से उसे आत्मसंतोष तथा आनंद का अनुभव होता है किन्तु जब उसका कर्म नैतिक नियमों के प्रतिकूल होता है